* R E - 3 1 0 2 - 0 3 / 1 0 0 0 *

RE-3102-03

M. A. (Part - I) Examination

April / May – 2010

Hindi : Paper - III

(काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन)

Time : 3 Hours] [Total Marks :

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 3**

☛ Subject Code No. : **3 1 0 2** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१ वक्रोक्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके भेदोपभेदों की चर्चा कीजिए ।

अथवा

१ साधारणीकरण के सम्बन्ध में संस्कृताचार्यों तथा हिन्दी के आधुनिक विद्वानों के मत स्पष्ट कीजिए ।

२ 'रीति' की परंपरा बताते हुए रीति और शैली के बीच का अंतर स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

२ वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ का अंतर बताते हुए ध्वनि पर आधारित काव्य के भेद लिखिए ।

३ परंपरा की परिकल्पना और निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत पर इलियट के विचार स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

३ प्लेटो के काव्य सिद्धांत का परिचय दीजिए ।

४ किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) हिन्दी की काव्यशास्त्रीय परंपरा

(ख) कवि शिक्षा

(ग) मनोविश्लेषणवाद

(घ) संरचनावाद ।

५ व्यावहारिक समीक्षा कीजिए :

मैं कह रहा हूँ बेधड़क हड़ताल मत करो,
हड़ताल, बन्द आदि बहरहाल मत करो
इस जिन्दगी के साथ यह खिलवाड़ किसलिए
देखो वतन का हाल, अब बेहाल मत करो ॥

खिलवाड़ समझ करके इसे 'किक्' न लगाओ,
इस जिन्दगी को बेधड़क फुटबाल मत करो,
फैशन नहीं यह तन को ढाँकने का प्रश्न है,
धोती को फाड़–फाड़कर रूमाल मत करो ॥

वेतन के साथ–साथ वतन का भी ख्याल हो,
अपनी किसी भी चाल से भूचाल मत करो,
बरगद में जाके लटक जाए कन्धे से भागकर,
माँगों को अपने किस्सए–बेताल मत करो ॥

लालच में पड़के स्वार्थ में, चाँदी के फेर में,
मिट्टी को अपने देश की पामाल मत करो,
अपना ही पेट 'गेट वे आफ इन्डिया' न हो,
अब दूसरों के पेट को, कंगाल मत करो ॥